इनकी नज़रों में बाबा...

बाबा को सबसे अधिक पसंद 'पवित्रता'

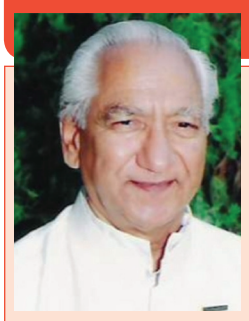

परम पवित्र परमात्मा और उनके रंग में रंगी हुई ब्रह्मा बाबा की आत्मा (बाप-दादा) दोनों को ही पवित्रता धारण किये हुए बच्चे सबसे अधिक प्यारे लगते थे। जितना मन-वाणी-कर्म से पवित्र उतना ही वह बापदादा के समीप था और है। दुनिया में यह जो मान्यता प्रचलित थी कि स्त्री-पुरुष इकट्ठे रहकर पवित्रता धारण नहीं कर सकते, बापदादा ने इस असंभव बात को संभव करके बताया। हज़ारों युगलों को योगबल से प्रैक्टिकल जीवन में कमल पुष्प के समान पवित्र रहना सिखाया, क्योंकि पवित्रता ही सच्चे सुख-शांति की नींव है। एक बार मुम्बई में एक नौजवान युगल (पति-पत्नी) बापदादा से मिलने के लिए आये। बाबा ने उन्हें कुछ मिनट ज्ञान की शिक्षा देकर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण का एक चित्र भेंट करते हुए कहा - "बच्चे, अगर इस अंतिम जन्म में पवित्रता धारण करोगे तो 21 जन्मों के लिए भविष्य में इन लक्ष्मी-नारायण जैसा जीवन पाओगे। कहो बच्चे, इस बूढ़े बाबा की बात मानोगे? शिव बाबा तुम्हें इन (पिताश्री) द्वारा डायरेक्ट कह रहा है, तो क्या बाप की बात नहीं मानेंगे?" शिव बाबा के मधुर महावाक्यों का उस युगल को ऐसा तीर लगा कि दोनों ने उसी समय बाबा के सामने जीवन-भर पवित्र रहने की प्रतिज्ञा की और पवित्रता की राखी एक-दूसरे को बांधी। बापदादा ने फिर उनका बहुत स्वागत किया, क्लास में महिमा की। वह युगल आज दिन तक पवित्र हैं और रहेंगे। है किसी मनुष्य की ताकत जो ऐसे नौजवान युगलों को सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन करा सके! यह तो स्वयं सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा का ही कर्त्तव्य है जिसने साकार ब्रह्मा द्वारा एक सेकेण्ड में उस युगल की एक-दूसरे के प्रति दृष्टि और वृत्ति का परिवर्तन किया। ऐसे एक नहीं, हज़ारों युगलों के उदाहरण हैं। - **ब्र.कु. निर्वैर,मुख्य सचिव,ब्रह्माकुमारीज़**

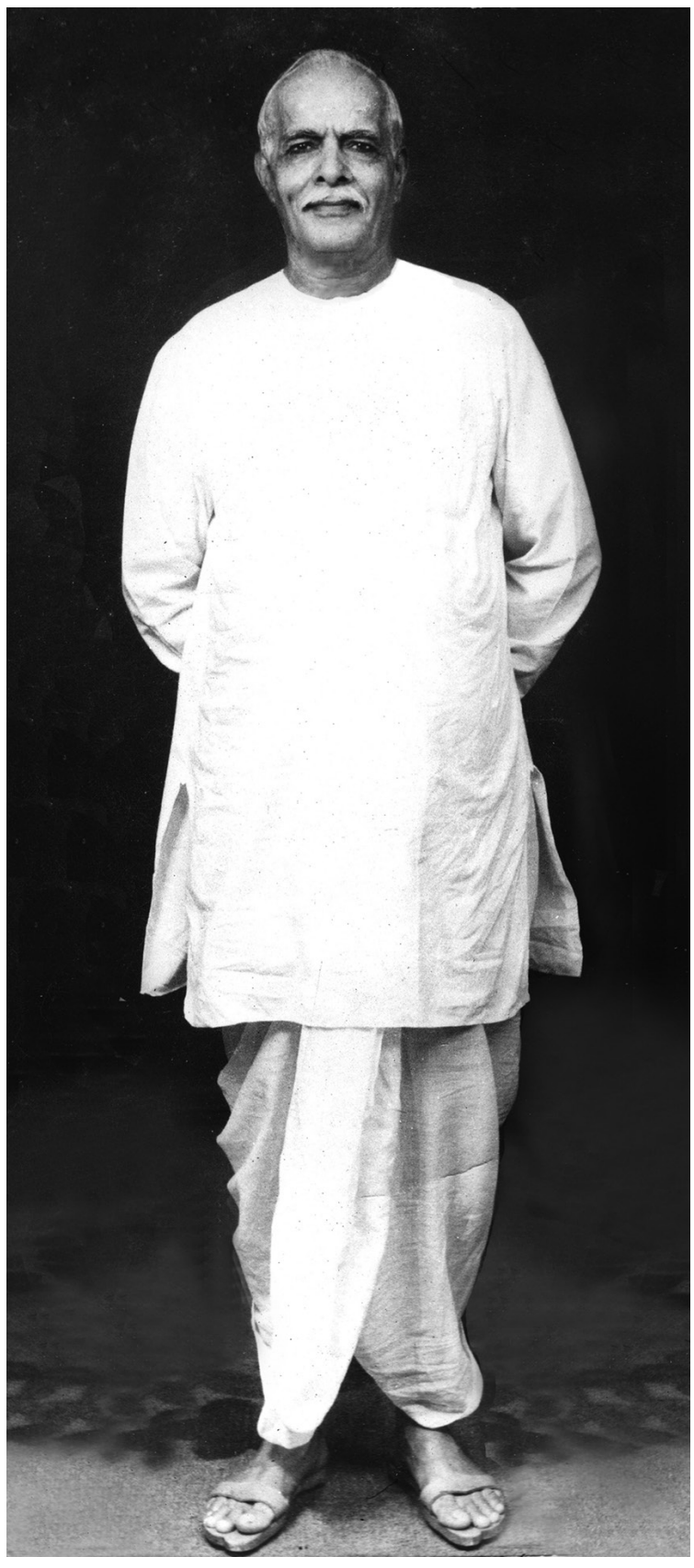

ब्रह्मा बाबा का हर श्वास विश्व सेवा अर्थ

मुझे ब्रह्मा बाबा के साथ रहने का अवसर मिला। उन्होंने मुझे बहुत प्यार किया। स्वयं बाबा ने मुझे हर शिक्षाओं से सुसज्जित किया। उन्होंने हर श्वास विश्व कल्याण अर्थ सफल किया। बाबा की अथक और बेहद की सोच ने मुझे प्रभावित किया। मैं जब भी बाबा से मिलता था, तो बाबा मुझे यज्ञ के बारे में और शिव बाबा के विश्व परिवर्तन के कार्य के बारे में सूक्ष्मता से समझाते थे। मैं भी आतुर रहता था। ऐसे बाबा को मैं कैसे धन्यवाद करूँ! जैसा बाबा ने मुझे प्यार किया, वैसे सभी को बाबा का असीम प्यार अनुभव होता था और ये अविस्मरणीय है।

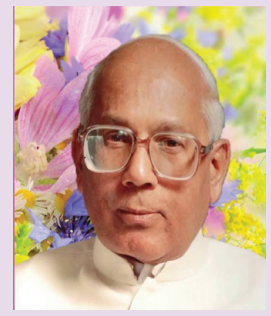

बाबा विश्व कल्याण की सेवा में सदा रहे

एक बार ब्रह्मा बाबा की तबियत थोड़ी बिगड़ने की वजह से डॉक्टर ने सलाह दी कि बाबा बहुत जल्दी उठते हैं, दिन में रेस्ट (विश्राम) भी करते नहीं, आप इनको रेस्ट दिया करो, इनको रेस्ट लेने के लिए कहो। मुझे याद है, उस समय मैं मधुबन में ही था। दीदी मनमोहिनी जी और दो-चार भाई-बहनों ने मिलकर बाबा से कहा कि "बाबा आप अमृतवेले योग में नहीं आइये। आप तो रात को देरी से सोते हैं और विश्व सेवा के बारे में सोचते रहते हैं। जब भी हम आपके कमरे में आते हैं, आप जागते रहते हैं। आप दिन-रात योग तो लगाते ही हैं। इसलिए थोड़े दिनों के लिए कृपया सुबह अमृतवेले में मत आइये।" बाबा ने कहा, "बच्ची, तुम क्या कहती हो! अमृतवेले न उठूँ! यह कैसे हो सकता है! उस ऑलमाइटी बाबा ने हमारे लिए समय दे रखा है, उसको कैसे छोड़ूँ!" उन्होंने बाबा से फिर बहुत विनती की कि बाबा डॉक्टर कहते हैं, आपको विश्राम लेना बहुत ज़रूरी है। बाबा ने कहा, "बच्ची, मैं किस डॉक्टर की बात सुनूँ? यह डॉक्टर कहता है, अमृतवेले रेस्ट करो, वो सुप्रीम डॉक्टर कहता है, अमृतवेले उठकर मुझे याद करो। मैं किसकी बात मानूँ? मुझे सुप्रीम डॉक्टर की बात ही माननी पड़ेगी ना! इसलिए मैं अमृतवेले रेस्ट नहीं कर सकता।" ऐसा कहकर बाबा ने उनकी बात को इंकार कर दिया। दीदी जी ने नहीं माना। उन्होंने कहा कि "बाबा, डॉक्टर ने बहुत कहा है, इसलिए आप कम से कम दो-तीन दिन मत आओ। हमारी यह बात आपको माननी ही पड़ेगी।" बहुत ज़िद करने के बाद बाबा ने कहा, "अच्छा बच्ची, सोचूंगा।" जब रोज़ के मुआफिक हम अमृतवेले जाकर योग में बैठे तो बाबा भी चुपके से आकर योग में बैठ गये। देखिये, बाबा ने अपनी ज़िन्दगी में एक दिन भी अमृतवेले का योग मिस नहीं किया। कैसी भी बीमारी हो, कितनी भी उम्र हो, उन्होंने ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन नहीं किया। उन दिनों कितने सेवाकेन्द्र थे! मुश्किल से 10-15 होंगे। जब मैं ज्ञान में आया था, कोई भी सेन्टर नहीं था सिवाय दिल्ली कमला नगर के। पहला जो सेंटर खुला विश्व भर में, वो कमला नगर सेंटर था, जहाँ हम रहते थे। दादी जानकी वहीं रहती थीं, मनोहर दादी और मनमोहिनी जी भी वहीं रहती थीं। इकट्ठे हम रहते थे। छोटी सी जगह थी, लेकिन हम इकट्ठे रहते थे, इकट्ठे खाते-पीते थे, इकट्ठे सेवा करते थे। वो कितने अच्छे दिन थे! तब से इन दादियों के साथ हमारा संबंध है। सन् 1951 में ये सब सेवा में आ गये, सन् 1952 में हम भी आ गये। सेवा तो लगभग इकट्ठी शुरू की। उससे पहले ये कराची या हैदराबाद में रहे।

- **ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा**

हर चरित्र में ज्ञान और अनुभव का समावेश

मेरे लौकिक पिता ने जब शरीर छोड़ा तो उनकी 30 ड्रेस मैंने अपने प्रयोग के लिए यह सोचकर रख ली कि ये मुझे फिट आती हैं और कुछ बचत हो जाएगी। आमतौर पर तो हम ऐसे कपड़ों को दान में किसी को दे देते हैं पर मैंने नहीं दिये। मधुबन में एक बार जब बाबा से छुट्टी लेने गया तो मैंने वो ड्रेस पहन रखी थी। बाबा के पास कई सम्पर्क वाले ऐसे बच्चे आते थे जो विदेश में रहते थे और वहाँ की रेडिमेड ड्रेस बाबा के पास छोड़ जाते थे। बाबा भी उन्हें रख लेते थे और ज़रूरत अनुसार बच्चों को देते रहते थे। बाबा ने पहले भी मुझे ऐसी ड्रेस दी थी, इस बार भी बाबा ने मुझे ऐसी एक और ड्रेस देनी चाही। मैंने अपनी इकॉनमी का वर्णन करते हुए कहा, लौकिक पिता जी के शरीर छोड़ने पर मैंने उनकी सभी ड्रेस रख ली हैं बाबा, देखो मुझे पूरी फिट आई हैं। बाबा मुस्कुराए फिर बोले, बाबा का दिया पहनोगे तो बाबा याद आएगा, लौकिक पिता का दिया पहनोगे तो लौकिक पिता याद आएगा। बाबा की इस गुह्य धारणा की बात सुनकर मैंने बाबा द्वारा दी गई ड्रेस ले ली।

कोई कुछ देता है तो उसे यज्ञ में समर्पित कर दो

सचमुच लौकिक पिता की ड्रेस पहनते ही लौकिक पिता का संकल्प आता था। बाबा तो यहाँ तक कहता है, किसी आत्मा से सौगात न लो। कोई कुछ देता है तो उसे यज्ञ में समर्पित कर दो। अगली बार मधुबन आया तो मैंने वे सारे ड्रेस यहाँ ही दे दिये। फिर अगली बार देखा, एक सेवाधारी भाई मेरे पिता की शर्ट पहले धोबीघाट पर कपड़े धो रहा था। शर्ट देखते ही मेरे मन में आया, मेरे पिता जी की शर्ट! यज्ञ में देने के बाद भी देखते ही वही मेरेपन की स्मृति आ गई। यदि पहनता रहता तो कितनी लौकिक स्मृतियाँ आतीं। एक शिवबाबा को याद करने के लिए अन्यों को भूलना ज़रूरी है, उसके लिए इस प्रकार की धारणा ज़रूरी है। बाबा सिखाते हैं, तुम्हारा ध्यान कहीं ना जाए। प्यारे बाबा पत्र के नीचे लिखते थे, अच्छा, सब बच्चों को याद प्यार। फिर लिखते थे, खुश रहो, आबाद रहो, ना बिसरो, ना याद रहो। बाबा कहते थे, मैं बच्चों को याद करूँ या शिवबाबा को याद करूँ!

- **ब्र.कु. बृजमोहन,अति. सचिव,ब्रह्माकुमारीज़**